# सत्यमेव जयते

– एक मनमोहक आगमिक संवाद

# क्या आगम के इन अनुवादों पर आप विश्वास रखते हैं ?

## तो हमारा यह संवाद आपको पढ़ना ही रहा...

# सत्यमेव जयते

– एक मनमोहक आगमिक संवाद

– भूषण शाह


-: प्रकाशक :-

**मिशन जैनत्व जागरण**

''जंबुवृक्ष'' C-503/504, श्री हरी अर्जुन सोसायटी,
चाणक्यपुरी ओवर ब्रिज के नीचे, प्रभातचौक के पास,
घाटलोडीया, अहमदाबाद.

पुस्तक : सत्यमेव जयते

प्रकाशक : मिशन जैनत्व जागरण

प्रति : ५००० कॉपी

मूल्य : रु. २०/-


## -: प्राप्ति स्थान :-

**भीलवाड़ा (राज.)**
सुनिल जैन (बालड़)
"सुपार्श्व" जैन मंदिर के पास,
जमना विहार, भीलवाड़ा

**जोधपुर**
विजयराजजी सिंघवी
जी हुजूर रेडीमेड, त्रिपोलीया बजार
जोधपुर - ३४२००२.

**के.जी. एफ**
आशिष तालेडा
प्रिन्स सूरजमुल्ल सर्कल, रोबर्ट सोनेपट,
के.जी. एफ - ४६३१२२. (कर्णा.)

# दर्द की दास्तान...

बेघर गरीब को इतना दुःख नहीं होगा, जितना अमीर को अपना घर टूट जाने से होगा...

फसल नहीं लगने से किसान को इतना दुःख नहीं होगा, जितना तैयार फसल नष्ट हो जाने से होगा...

निःसंतान स्त्री को इतना दुःख नहीं होगा, जितना एक माँ को बच्चे की मृत्यु से होगा...

ज्यादा क्या कहना ?

शायद जिनशासन ना मिलने का दुःख इतना नहीं होता, जितना मिले हुए शासन के नाश होने से हो रहा है।

वैसे तो पंचम आरे के प्रभाव से नाश होना तो स्वाभाविक है लेकिन विशेष दुःख तो इस बात का है कि श्रावक कहलानेवाले लोगों ने ही इस शासन का नाश करने हेतु कमर कसी है।

जैनशासन यानि मोक्षमार्ग के शुभ अनुष्ठान और इन अनुष्ठानों के मार्गदर्शक आगम ग्रंथ। अवसर्पिणी काल के प्रभाव से वैसे भी श्रुतसागर का बिंदु ही उपलब्ध है। उपलब्ध श्रुत के दो विभाग है एक सूत्र और दूसरा अर्थ। वर्तमान में सूत्र चाहे सुरक्षित हो लेकिन अर्थ की धरोहर पर कई बार काले बादल मंडराते नजर आते हैं।

मत-मतांतर के इस युग में कई बार अपनी मिथ्या मान्यता से विरुद्ध बातें जब प्रमाणित हो जाए तो भी कदाग्रहवश आगम के वाक्यों का गलत अर्थघटन करके सफेद झूठ जैसी बातों का भी जोर-शोर से प्रचार करना देखा जाता है।

जिनप्रतिमा एवं जिनपूजा आगमों से प्रमाणित होते देख यह कड़वा सच गले से उतर न सका। इसलिये आगमों में पाये जानेवाले **'जिनप्रतिमा'** शब्द में **'जिन'** शब्द को कामदेवादि अन्यदेवपरक बताकर आगमों का विपरित अर्थ करने की गुस्ताखी भी लोग कर बैठे।

**'अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ'** जोधपुर द्वारा प्रकाशित ३२ आगमों की शृंखला में जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति Page 25 एवं रायप्पसेणीय सूत्र Page 112 पर **'जिन प्रतिमा तीर्थंकरों की नहीं'** इस नाम के लेख से बड़े बेहुदा रीति से जिनप्रतिमा एवं जिनपूजा को नकारा गया है एवं आगम प्रमाणों का विपरीत अर्थघटन कर भोले श्रावकों को गुमराह करने का अपराध किया है। साथ ही आगम विरुद्ध बातों पर आगम का नाम चढ़ाकर उत्सूत्र प्ररुपणा की है।

इस संस्था के ऐसे काले फरेब को एक रोचक संवाद के माध्यम से इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। सुज्ञजन इसे जानकर मिथ्याज्ञान प्रचारक इस संस्था के साहित्य से सावधान रहे ऐसी मध्यस्थ श्रावकों से अभ्यर्थना...

**- भूषण शाह**

# संवाद के पात्र

**मम्मी** : अरे ! मोहित ! चल जल्दी कर आज तेरी फेवरेट सब्जी बनाई है Tomato केप्सीकम जल्दी मुँह धोकर Ready होकर के आ जा ! (College से लौटे मोहित को मम्मी ने मीठा आवकार दिया)

**मोहित** : छोड़ो मम्मी, क्या फेवरेट सब्जी ? आज तो मूड ही खराब है। (उदास मोहित ने जवाब दिया)

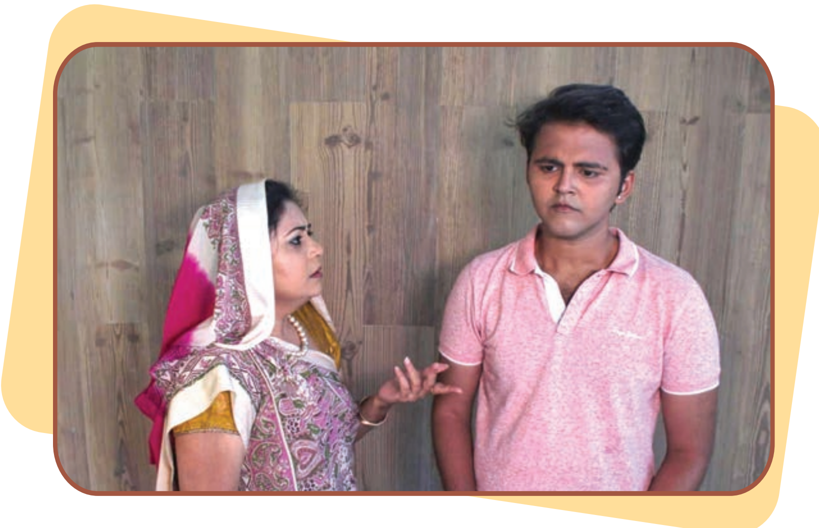

**मम्मी** : अरे मोहित ! आज इतना उदास क्यों है ?

**मोहित** : मम्मी जब धर्म में हार होती है, तब किसी भी तरह कोई भी वस्तु मूड सेट नहीं कर सकती। क्या करुं बहुत ही जी जल रहा है। (इतना बोलकर के Bag फेंककर सोफासेट पर लेट गया)

**मम्मी** : लेकिन बेटा मुझे बता तो सही हुआ क्या है ?

**मोहित** : क्या बताऊँ मम्मी ? मेरा Best Friend सत्यम् जो रोज मेरे साथ सामायिक करने स्थानक आता है, अब किसी के बहकाने से हर सुबह मंदिर में जाने लगा है और पूजा भी शुरु कर दी है। श्री शांतिनाथ भगवान का बड़ा भक्त बना है, कई बार भजन भी गुनगुनाते रहता है।

**मम्मी** : अरे ! इतना होशियार विवेकी लड़का कैसे इस चक्कर में फँस गया ? कितनी हिंसा होती है इस पूजा में तो ?

**मोहित** : मम्मी आप तो सारे दिन Kitchen में रसोई करते समय पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय आदि षट्काय की हिंसा कर रही हो और पूजा से होनेवाली इतनी छोटी-सी हिंसा की निंदा क्यों कर रही हो ? कम-से-कम पूजा में भगवान् का शुभ ध्यान तो होता है।

**मम्मी** : (गुस्से में आँखें लाल करके कहा) अरे ! तू ऐसी बातें कब से करने लगा।

**मोहित** : मम्मी ! मैं नहीं, ऐसे जवाब तो सत्यम् हमको देता है। पिछले सात दिन से हमारी चर्चा चल रही थी और आज तो उसने सिक्सर लगाकर मुझे चुप कर दिया।

**मम्मी** : क्या किया उसने ?

**मोहित** : आज तो उसने ३२ आगम की पुस्तकों में से मुझे बताया कि आगम में भी जिनप्रतिमाओं का वर्णन आता है और महापुरुष, महासतीयों द्वारा की गई जिनपूजा का उल्लेख भी है। अब जिनागम से प्रमाणित होने पर क्या जवाब देना ? मैं तो सोच रहा हूँ कि हो सकता है कि हम ही अंधेरे में हो। चर्चा छोड़कर उसके साथ हो जाऊँ। आगमों में कहा है तो जिनपूजा कल्याणकारी ही होगी ना ?

**मम्मी** : अरे मूर्ख ! इस तरह हार नहीं मानते आगम की पंक्तियों के अनेक अर्थ होते हैं। आज सुबह ही सामायिक में मेरी सहेली ने मुझे आगम के अनुवाद में एक गजब की बात बताई कि आगमों में जो बातें आती है, वह जिनप्रतिमा तीर्थंकर की नहीं लेकिन अन्यदेवों की है। आज सुबह ही मैंने जाना और आज ही तूने ऐसी बात की, सच में सम्यग्ज्ञान तो हमारे कल्याण के लिए ही प्रयत्न करता है।

**मोहित** : वाह !! मम्मी क्या खुशखबर सुनाई। (खुशी से उछलते हुए बेटे ने कहा) ''जल्दी से वह पुस्तक मुझको लाकर दो, आज रात को व्यवस्थित पढ़करके कल सुबह सत्यम् की भ्रान्तियों को दूर करूँगा।

## :: दूसरे दिन ::

सत्यम्

**सत्यम्** : मोहित ! कल की चर्चा में मैं भी उग्र हो गया था, उसकी माफी चाहता हूँ लेकिन तत्त्व की बातों में जरा भी घालमेल मुझे मंजूर नहीं, तु मेरा मित्र है यह बात सत्य है लेकिन प्रभु वीर का मार्ग परम सत्य हैं। उसमें छेड़खानी नहीं चलेगी। तुझे पूजा नहीं करनी

हो तो मत कर तेरी श्रद्धा न हो तो ठीक है, लेकिन जो श्रद्धा से पूजा कर रहे हैं, उन्हें गलत कहने का तुझे अधिकार नहीं है, अब तो आगमों से भी जिनपूजा प्रमाणित...

**मोहित** : (भड़कते हुए बीच में बोल पड़ा) अरे ! बकवास बंद कर ! आगम तो शब्दों का ढेर है। उसका क्या अर्थ करना वह तो ज्ञानीजनों का कार्य है। ज्ञानीयों द्वारा किये अर्थों से ही आगमों के गहन ताले खुलते हैं।

**सत्यम्** : जरा मैं भी तो देखूँ आपके पूज्य ज्ञानीयों के किये गये अर्थ क्या हैं ?

**मोहित** : ''अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ'' इस नाम की जोधपुर की संस्था हैं। बरसों से श्रुतज्ञान की गंगा बहाने का सत्कार्य कर रही है। उनके छपायें हुए ३२ आगमों की शृंखला में से ''जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति'' सूत्र में Pg. 25 पर ''जिन प्रतिमा तीर्थंकरों की नहीं'' इस नाम के Title के लेख से सिद्ध किया है कि आगमों में जिसका वर्णन आता है, वे प्रतिमाए तीर्थंकर देव की नहीं लेकिन अन्य कामदेव आदि देवों की हैं। तू तटस्थता से इसे पढ़ तो खुद जान जाएगा कि आगम क्या कहते हैं।

## जिन प्रतिमा तीर्थकरों की नहीं

**शंका** - जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र के प्रथम वक्षस्कार में जिन प्रतिमा का उल्लेख है वे देवों द्वारा पूजी जाती हैं तो फिर मूर्तिपूजा मानने में क्या बाधा है?

**समाधान** - उपरोक्त आगम पाठ में जहाँ जिन प्रतिमा का उल्लेख है उसके आगे पीछे के वर्णन से यह सिद्ध होता है कि ये मूर्तियाँ सरागी देवों की हैं, तीर्थंकर भगवान् की नहीं तथा भौतिक सुख-समृद्धि की लालसा से देवों द्वारा पूजी जाती हैं, धर्म समझ कर नहीं।

**शंका** - 'जिन प्रतिमा' शब्द का अर्थ 'तीर्थंकर की मूर्ति' होता है तो आप 'सरागी देवों की मूर्ति' ऐसा अर्थ किस आधार से मानते हैं?

**समाधान** - ठाणांग सूत्र के तीसरे स्थान के चौथे उद्देशक में तीन प्रकार के जिन बताये हैं-

**पुस्तक - जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र  Page 25**
**प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

**सत्यम्** : अरे दोस्त ! मैं तो पहले ही पढ़ चुका हूँ, ये किताब तुझे किसने दी ?

**मोहित** : (मुस्कराते हुए) क्यों नानी याद आ गई ना ?

सत्यम् : नानी नहीं नवरात्री याद आ रही है।

मोहित : मतलब ?

सत्यम् : मतलब कुछ नहीं इस नवरात्री के दिनों में हमारे पड़ोस में रहनेवाली मायावती आन्टी से इस लेख के बारे में चर्चा हुई थी।

मोहित : अरे ! मायावती आन्टी तो परम विदुषी हैं। स्थानक में भी सभी को स्वाध्याय करवाती हैं। ३२ आगमों का उन्होंने गहन अध्ययन किया है। Aunty ने तो तुझे बोलते चुप ही कर दिया होगा ना ?

सत्यम् : चुप तो कर दिया था लेकिन मुझे नहीं खुद के मुँह को !

मोहित : चल सीधी रीति से बता क्या हुआ ?

सत्यम् : देख ! नवरात्री के दिनों में मायावती Aunty अपनी सहेली सरलादेवी के साथ कुलदेवी की पूजा के लिए जा रही थी और मैं रास्ते में ही मिला। मैंने कहा, "Aunty जी आप तो मूर्ति की पूजा में हिंसा मानती हो, तो यह देवीपूजन और दीपक आदि अनेक सामग्रीयों को ले जाने का ढोंग क्यों कर रही हो ! वीतराग परमात्मा को छोड़करके यह व्यंतर देव-देवीयों की पूजा कहाँ पकड़ ली आपने ?"
(पास में खड़ी सरला Aunty बोल उठी)

सरला : बेटा बात तो तेरी सही है, लेकिन अब इसमें हिंसा थोड़ी ही देखी जाती है ? हिंसा तो केवल धर्म करते समय ही छोड़ी जाती है बाकी संसार कैसे चलेगा ? संसार में तो हिंसा करनी ही पड़ती है।

**सत्यम्** : अरे Aunty ! संसार के क्षेत्र में जो भयंकर हिंसा करके पाप और भवभ्रमण ही मिलता है, उसको आप थोड़ा भी कम नहीं कर सकते और थोड़ी-सी हिंसा में भी जहाँ जिनेश्वर प्रभु के प्रति भक्तिभाव और उनकी आज्ञा पालन करने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न होता है, ऐसी जिनपूजा आपको अखरती है, गजब की विडंबना है !

**सरला** : बेटा तूने बड़ी कमाल की बात की, मुझे तो पता ही नहीं चला हम क्या कर रहे हैं ? मैं सबसे पहले जिनालय में तीर्थंकर प्रभु की पूजा अर्चनादि करके शुद्धसम्यक्त्व की प्रार्थना करूँगी, बाद में देवी पूजन करूँगी।

**मैं (सत्यम्)** : Aunty जी ! बाद में देवीपूजन करने की क्या जरुरत है ? तीर्थंकर देव से बड़ी हस्ती दुनिया में कोई नहीं है। ६४ ईन्द्र भी उनकी पूजा करते हैं। पूजा करने से सारे विघ्न दूर हो जाते हैं। दूसरे देव-देवीयों को सलाम करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

**सरला** : तो ठीक हैं मैं जिनालय से सीधे घर लौट जाऊँगी, Thank you, बेटा ! तूने मुझे सही रास्ता बताया।
(बीच में ही मायावती Aunty भड़क उठी)

**मायावती** : अरे क्या Thank U - Wank U कर रही है ? भोली भूत ! तु अपना मुँह बंद ही रखा कर। सत्यम् ! तू भी सुन ले हमको ज्यादा अच्छी बातें सिखाने की कोई जरुरत नहीं है। क्या हिंसा और क्या धर्म हम सब कुछ जानते हैं। जिनपूजा में तो पाप ही है और यह देवी पूजा सिर्फ हम नहीं करते, आगमों में भी उल्लेख है कि सम्यक्त्वी देव और द्रौपदी महासती आदि महापुरुषों ने भी की है।

**मैं (सत्यम्)** : अरे Aunty ! वह तो जिनपूजा की है !

**मायावती** : तू आज का जन्मा हुआ बच्चा ! तुझे क्या पता आगमों में क्या लिखा है। सुनी सुनाई बातों पर भरोसा मत कर, आगमों में बतायी गयी प्रतिमाएँ जिनेश्वर देव की नहीं, लेकिन कामदेव और अन्य देवों की है। यह आगमों के अनुवाद में सिद्ध किया है और तू मेरे घर आना, तो बता भी दूँगी। महापुरुष भी अपने जीवन के व्यवस्थानुसार देव देवी पूजन करते हो तो हमें करने में क्या हर्ज है। लेकिन जिनपूजा तो हरगिज नहीं करुँगी ! (इतना बोलकर मेरी ओर मीठी नजर से देख रही सरला Aunty को हाथ पकड़ खींचकर देवी मंदीर के रास्ते ले गई !

दुसरे दिन मैं उनके घर गया और उन्होंने मुझे ''जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र'' के अनुवाद ग्रंथ का Page 25 बताया यही जो आज तू लेकर आया है।

''अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृतिरक्षक संघ'' जोधपुर द्वारा प्रकाशित उस Page 25 का पूरा लेख मैंने व्यवस्थित पढ़ा साथ ही दूसरे आगमों के पन्नों पर नजर कर मैंने कहा...)

**मैं (सत्यम्)** : Aunty जरा इस ''जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र'' का Page 83 देखिए यहाँ लिखा है कि ***''ये शाश्वत प्रतिमाएँ तीर्थंकरों की नहीं समझकर कामदेव आदि सरागीयों की समझनी''*** ऐसा लिखा है तो यहाँ पर ***''जिनप्रतिमा''*** के ***''जिन''*** शब्द का अर्थ अन्य कामदेव आदि देव किया है !

तृतीय प्रतिपत्ति – सिद्धायतन का वर्णन ८३

उस सिद्धायतन के बहुमध्य देशभाग में एक विशाल मणिपीठिका कही गई है जो दो योजन लम्बी चौड़ी, एक योजन मोटी है, सर्वमणिमय है, स्वच्छ है। उस मणिपीठिका के ऊपर एक विशाल देवच्छंदक-आसन विशेष कहा गया है जो दो योजन लम्बा, चौड़ा और कुछ अधिक दो योजन का ऊंचा है, सर्वरत्नमय है और स्वच्छ स्फटिक के समान है। उस देवच्छंदक में जिनोत्सेध प्रमाण एक सौ आठ जिन प्रतिमाएं रखी हुई हैं।

**विवेचन** – यहां पर एवं अन्यत्र भी जहां 'सिद्धायतन' का वर्णन आया है। वहां सर्वत्र 'सिद्धायतन' का अर्थ – 'शाश्वत प्रतिमाओं का स्थान' समझना चाहिये। टीकाकार ने भी इसी प्रकार का अर्थ किया है। ये शाश्वत प्रतिमाएं तीर्थंकरों की नहीं समझकर कामदेव आदि सरागियों की समझनी चाहिये। मूलपाठ में आये हुए 'जिन' शब्द के अनेक अर्थ होने से यहां पर तीर्थंकर आदि के अर्थ उचित एवं प्रासंगिक नहीं होते हैं।

**पुस्तक - जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र Page 83**
**प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

**मायावती** : हां ! हां !

**मैं (सत्यम्)** : और इसी आगम के Page 25 पर **'जिणुस्सेहप्रमाण...'** पद का अर्थ करते हुए ऐसा लिखते है कि **''वहाँ तीर्थंकर के शरीर की ऊँचाई जितनी ऊँची एक सौ आठ जिन प्रतिमाए हैं''** तो यहाँ **''जिणुस्सेह''** यानि **'जिनकी ऊँचाई'**

प्रथम वक्षस्कार - सिद्धायतनकूट की अवस्थिति २५

उस सिद्धायतन के भीतर अत्यंत समतल, सुंदर भूमिभाग है, जो मुरज आदि के चर्मपुट रूप ऊपरी भाग के सदृश है यावत् उस सिद्धायतन के अत्यंत समतल, सुंदर भूमिभाग के बीचों-बीच देवच्छदक-देवासन विशेष बतलाया गया है। यह लम्बाई तथा चौड़ाई में पांच सौ-पांच सौ धनुष तथा ऊँचाई में पांच सौ धनुष से कुछ अधिक है। वह सम्पूर्णतः रत्नमय है।

वहाँ तीर्थंकरों के शरीर की ऊँचाई जितनी ऊँची एक सौ आठ जिन प्रतिमाएं हैं यावत् वहाँ धूप खेने के कुड़छे - धूपदान रखे हैं।

**विवेचन** – प्रस्तुत सूत्र में सिद्धायतन कूट के अंतर्गत एक सौ आठ जिन प्रतिमाओं का उल्लेख हुआ है परन्तु ये जिन प्रतिमाएं तीर्थंकरों की नहीं है। निम्न शंका-समाधान से यह विषय स्पष्ट हो जायगा।

**पुस्तक - जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र Page 25**
**प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

ऐसा अर्थ करते समय **तीर्थंकर की ऊँचाई जितनी ऊँची प्रतिमा** ऐसा क्यों लिखा है, ऐसा ही लिखते कि **''कामदेव आदि देवों की ऊँचाई जितनी ऊँची प्रतिमा''** यहाँ तीर्थंकरों का कोई संबंध ही होना नहीं चाहिए। (मायावती Aunty की आँखें फटी की फटी रह गई और ललाट पर चिंता की रेखाएँ उभराने लगी)

मैं (सत्यम्) : और ऐसा सिर्फ यही पर नहीं लेकिन ''रायप्पसेणीय सूत्र'' के अनुवाद में भी Page 133 पर लिखा है कि **सूर्याभ विमान में जिनेश्वर के शरीर जितनी ऊँची एक सौ आठ जिन प्रतिमाएँ संस्थापित हैं।** यहाँ पर भी ऐसा ही लिखना चाहिए कि **''कामदेव आदि देवों के शरीर जितनी ऊँची है''** देखो! सत्य को दबा रखना इतना आसान नहीं हैं, अगर आगमों का अर्थ मैं कह रहा हूँ, वैसा नहीं होता तो अनुवाद करते समय भूल से भी तीर्थंकर का नाम लिखा नहीं होता। वास्तव में तो यहाँ पर इन्होंने सच्चा अर्थ किया है और विवेचन में कहीं कहीं अपने संप्रदाय के राग के कारण **''कामदेव आदि देव की प्रतिमा हैं''** ऐसा लिखकर भोले लोगों को गुमराह करने की कोशिश की है।

तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं। तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं सेयं, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा सेयं। तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं पि पच्छा वि हियाए, सुहाए, खमाए, णिस्सेयसाए, आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

भावार्थ - सूर्याभदेव के सामानिक परिषद् के देवों ने सूर्याभदेव के मन में जो चिंतन, संकल्प हुआ, उसे जाना। इसे ज्ञात कर, जहाँ सूर्याभदेव था, वहां आए। हाथ जोड़ कर मस्तक पर अंजलि घुमाते हुए, उसे वर्धापित किया और कहा - देवानुप्रिय! सूर्याभ विमान में जिनेश्वर के शरीर जितनी ऊँची एक सौ आठ जिन प्रतिमाएँ संस्थापित हैं। सुधर्मा सभा में माणवक चैत्य स्तम्भ है। वज्ररत्न निर्मित गोल, वर्तुलाकार डिब्बों में अनेक जिन सक्थाएं (दाढाएं) रखी हुई हैं। वे आपके लिए तथा अन्य बहुत से वैमानिक देवों और देवियों के लिए अर्चनीय और पर्युपासनीय हैं। हे देवानुप्रिय! यह पूर्व करणीय है तथा पश्चात् करणीय है, पूर्व श्रेय है, पश्चात् श्रेय है तथा (यही) पूर्व भी, पश्चात् भी आनुक्रमिक परंपरया शुभ होगा।

**पुस्तक - रायप्पसेणीय सूत्र    Page 133**

**प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

कोई मुसलमान भूल से भी कभी ''ॐ नमः शिवाय'' नहीं बोलेगा, अगर बोलेगा तो उसके पीछे कोई गहन कारण होगा और यहाँ आगम के अनुवाद में प्रतिमाओं को जिनेश्वर के शरीर के समान बताने का कारण भी यही है कि सच्चाई कभी छुपती नहीं – 'दाबी दुबी ना रहे रुई लपेटी आग'। (इतना सुनकर पास में खड़ी सरला Aunty मुस्कुराने लगी और मायावती Aunty के कान के पास जाकर कहा)

**सरला** : अरे माया ! छोड़ दे अपना आग्रह जो सच है तो है उसे दबाने की इतनी मेहनत क्यों कर रही हो ? कह दे कि आगमों में तो जिनपूजा लिखी ही है, लेकिन हम लोग अपने संप्रदाय के रागवश स्वीकार नहीं कर सकते हैं, इसी कारण से आगम का अर्थ करते समय उलटा अर्थघटन करते हैं। लेकिन तुम्हारी चतुराई ने हमें पकड़ लिया है।

वैसे भी तेरापंथ आचार्य तुलसीजी तो कई बार प्रवचन में कहते भी थे और पुस्तकादि में लिखकर भी गए हैं कि तीर्थंकर प्रतिमा और आगमों का कोई विरोध नहीं है। इतने संस्कारी और होनहार लड़के के साथ फिजूल की चर्चा क्यों खींच रही हो। धन्यवाद देकर बात पूरी कर दे। (मायावती Aunty ने आँखों से अंगारे बरसाकर सरला Aunty को चेतावनी दी और सरला Aunty चुप होकर दूर जाकर खड़ी हो गयी)

**मायावती** : ए बच्चे ! तू अपने आप को बड़ा होशियार समझता है। Printing Mistake क्या हो गई तू तो सिर पर चढ़ रहा है। हम से लिखने में भूल हो गई, इसका मतलब यह थोड़ी है कि तुम सच साबित हो गए।

**मैं (सत्यम्) :** Aunty ! चोर चोरी कर रहा हो और भूल से लाईट चालू कर दे या उसके मोबाईल की घंटी जोर से बजने लगे तो उसे भूल नहीं कहते ! वह भला ही होता है क्योंकि वहाँ सत्य की जीत है। आप भी आगम का विकृत अर्थ करने जा रहे थे और इन २-३ स्थलों में भूल से जैसे शब्द है वैसा ही अर्थ किया तो उसे Printing Mistake या भूल नहीं कहेंगे, क्योंकि वास्तव में यही सत्य है, हाँ आचार्य मधुकर मुनिजी के अनुवाद देख लो वहाँ कही भी जिनप्रतिमा को कामदेवादि देव की प्रतिमा कहने की बकवास नहीं की एवं तेरापंथ संप्रदाय के अनुवादों में भी ऐसी बेईमानी नहीं की है। मैं तो धन्यवाद देता हूँ इन सत्यवादीयों को जिन्होंने सत्य की निष्ठा से आगमों का सत्य अनुवाद किया है ! आगम के आधार से अपनी मान्यता में रही हुई भूलों को सुधारना चाहिए, अपनी मान्यता के आग्रह के कारण आगमों के अर्थों में चोरी नहीं की जाती। (सरला Aunty ने मुट्ठी पर अंगूठा खड़ा करके मेरी ओर Thumsup का ईशारा करके मेरा हौसला बढ़ाया)

**मैं (सत्यम्) :** और भी देखो मायावती आन्टी "रायप्पसेणीय सूत्र" Page 112 पर लिखते हैं कि "मणि पीठिकाओं पर भगवान ऋषभ, वर्धमान, चन्द्रानन एवं वारिषेण इन

१११२ राजप्रश्नीय सूत्र

लम्बाई-चौड़ाई में १६-१६ योजन तथा १६-१६ योजन से कुछ अधिक ऊंचे हैं। वे [illegible] अंकरत्न, कुंद, ओसबिन्दु मथित अमृत के फेनपुंज के समान श्वेत हैं। सम्पूर्णतः रत्नमय, उज्ज्वल यावत् सुन्दर हैं।

उन स्तूपों के ऊपर आठ-आठ मंगल प्रतीक, ध्वजाएं, छत्र, अतिछत्र यावत् सहस्र[illegible] कमल हस्तक पर्यंत वर्णन पूर्ववत् कथनीय है।

उन स्तूपों में से प्रत्येक के चारों दिशाओं में एक-एक मणिपीठिका बतलाई गई है। वे मणि पीठिकाएं आठ-आठ योजन लम्बी चौड़ी तथा चार-चार योजन मोटी हैं। वे सम्पूर्ण मणिमय, स्वच्छ यावत् मनोज्ञ हैं। उन मणिपीठिकाओं पर चार जिन प्रतिमाएं हैं, जो उन-उन जिनों के देह की ऊंचाई के अनुरूप है, पर्यंकासन में संस्थित हैं। उनके मुख स्तूप के अभिमुख संस्थापित हैं। उन मणिपीठिकाओं पर भगवान् ऋषभ, वर्द्धमान, चन्द्रानन एवं वारिषेण, इन चार नामों की शाश्वत बनी हुई जिन प्रतिमाएं हैं।

**विवेचन** - प्रस्तुत सूत्र में प्रयुक्त **जिणपडिमा** (जिन-प्रतिमा) शब्द का प्रासंगिक अर्थ क्या है इस विषय में निम्न शंका - समाधान प्रस्तुत है -

**पुस्तक - राजप्रश्नीय सूत्र Page 112**

**प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

चारों नामों की शाश्वत जिनप्रतिमाएँ हैं’’ अगर यह अन्य देवों की प्रतिमाएँ होती तो यहाँ भगवान लिखने की क्या जरुरत थी ? आप लाख प्रयत्न कर लो लेकिन सूर्य को अपनी अंगुलीयों से ढँकने का प्रयत्न पागलपन ही है ! (मायावती Aunty अपने होश खो बैठी फिर भी अपनी बात पर Fevicol की तरह चिपके रहकर कहा कि...)

**मायावती** : तुम इतने क्यों उछल रहे हो ? अब नयी Printing होगी तब हम सभी जगह ‘कामदेव आदि देवों की प्रतिमा है’ इस तरह छपवा देंगे तब तो तुम्हें कोई एतराज नहीं होगा ना ?

**मैं (सत्यम्)** : धन्यवाद ! Aunty ! आपने अपना नाम सार्थक किया।

अरे ! स्थानकवासी के सभी संप्रदाय आपको साथ दें और तेरापंथी भी आपके इस अर्थघटन में संमत हो जाए तो मैं मानूं कि आपने सही अर्थ किया है।

**मायावती** : देख बच्चे ! हमको किसी की पड़ी नहीं है, जिसको जो मानना हो वह मानें हम तो हमारी धारणा में एकदम दृढ़ हैं।

**मैं (सत्यम्)** : लेकिन ऐसा लिखने पर भी आपको दूसरी आपत्ति आएगी।

मायावती : हें ! अब क्या तकलीफ हैं तुमको ?
(सरला आन्टी की मुस्कुराहट मेरी पीठ थपथपा रही थी)

मैं (सत्यम् ) : Aunty ! स्थानांग सूत्र के चौथे स्थान दूसरे उद्देश्य के अनुवाद में Page 351 पर ऐसा लिखा है कि आगमों में उन सब प्रतिमाओं की अवगाहना पांच सौ धनुष्य की बतलाई है !

स्थान ४ उद्देशक २ ३५१

स्थान) ही सिद्धायतन कहलाते हैं। सिद्धायतन में न तो सिद्ध भगवान् विराजित है न ही किसी ने वहाँ से सिद्ध गति को प्राप्त किया है अतः सिद्धायतन देव विशेषों के स्थान मात्र हैं, उनका मुक्तात्मा रूप सिद्ध भगवंतों से कोई संबंध नहीं है।

इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र में प्रथम तीर्थङ्कर श्री ऋषभदेव हुए थे और अन्तिम तीर्थङ्कर वर्धमान् (महावीर) हुए थे। इसी प्रकार इस अवसर्पिणी काल में ऐरवत क्षेत्र में प्रथम तीर्थङ्कर श्री चन्दानन स्वामी और चौबीसवें तीर्थङ्कर वारिसेन हुए थे। इनमें ऋषभदेव और चन्दाननस्वामी की अवगाहना पांच सौ धनुष थी और अन्तिम तीर्थङ्कर वर्धमान तथा वारिसेन तीर्थङ्कर की अवगाहना सात हाथ की थी। परन्तु यहाँ जो चार प्रतिमाओं का वर्णन किया गया है उन सब की अवगाहना आगम में पांच सौ धनुष की बतलाई गयी है। इसलिए ये चारों प्रतिमाएँ इन ऋषभदेव आदि भगवन्तों की नहीं है। जैसा कि टीकाकार ने बतलाया है कि ये प्रतिमाएँ और सिद्धायतन शाश्वत हैं। अतः इनको तीर्थङ्कर की प्रतिमाएं मानना आगम के अनुकूल नहीं है। यह तो नन्दीश्वर द्वीप की रचना है वैसी रचना का वर्णन आगमकारों ने किया है।

पुस्तक - स्थानांग सूत्र Page 351
प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)

मायावती : हाँ, तो ?

मैं (सत्यम् ) : जरा अकल लगाओ ''जिणुस्सेह प्रमाण'' का अर्थ आपके हिसाब से होगा ''कामदेवादि देवों के ऊँचाई जितनी ऊँची प्रतिमा'' और देवों की उत्कृष्ट अवगाहना ७ हाथ की है तो फिर पांच सौ धनुष्य ऊँचा कौन-सा देव होगा जिनकी ये प्रतिमाएँ हैं !

**मायावती** : अरे ! देवों का उत्तरवैक्रिय शरीर तो पांच सौ धनुष्य लंबा क्यों नहीं हो सकता ?

**मैं (सत्यम्)** : देवों का उत्तरवैक्रिय शरीर तो १ लाख योजन ऊँचा भी होता है तो यहाँ पांच सौ धनुष्य की ऊँचाई होने का क्या कारण होगा ? Aunty ! तीर्थंकरों की उत्कृष्ट अवगाहना (ऊँचाई) पांच सौ धनुष्य की होती है, इसीलिए यह पांच सौ धनुष्य की ऊँचाईवाली प्रतिमाएँ अरिहंत देव सिवाय और किसी भी देव की नहीं हो सकती। तो अब मान जाओ और सत्य को स्वीकार कर लो।

**मायावती** : सत्यम् ! मैं तेरे सवालों का जवाब नहीं दे सकती, लेकिन मेरे स्वाध्यायी गुरु श्रीमान झुठालालजी डोशी से चर्चा करके इसका निर्णय करना होगा। ७ दिन बाद मेरे घर डोशीजी आनेवाले हैं। तब उनके साथ बैठकर तुम चर्चा करना, उनका सामना शायद तुम नहीं कर पाओगे। हमारे संप्रदाय में बहुत से श्रावक-श्राविकाओं को स्वाध्याय करवाते हैं।

**मैं (सत्यम्)** : ठीक हैं Aunty जी मुझे मेरी श्रद्धा पर पूर्ण भरोसा है, सत्य अगर आपके पक्ष में है तो मैं स्वीकारने को तैयार हूँ। श्रद्धा का सूत्र है 'जो सच्चा वह मेरा' और आग्रह का सूत्र है 'मेरा वह सच्चा'। (इतना कहकर मैंने पीछे मुड़कर देखा तो आस-पास के मकानवाले सभी श्रावक-श्राविका बैठकर हमारी चर्चा का आनंद ले रहे थे और सभी की मुस्कान मान लो मुझे कह रही थी कि **बेटा ! सत्यमेव जयते** Best of luck !...)

**सत्यम्** : मोहित ! इस नवरात्री के दिनों में मायावती Aunty के साथ मेरी यह चर्चा हुई। यह सारी परीक्षा हो चुकी है, इसलिए इसमें छपी बातों से तुम मुझे समझा नहीं सकते और सत्य भी यही है कि देवलोक में भी जो शाश्वत जिनप्रतिमाएँ हैं वे तीर्थंकर देवों की ही है जैसा कि आगमों में लिखा है।

(बात सुनकर विश्वस्त हुए मोहित ने कहाँ...)

**मोहित** : यार सत्यम् ! I am proud of you कि तेरे जैसा कल्याण मित्र मुझे मिला। अब मेरी आँखें खुल गई, इन "जैन संस्कृत रक्षक" नाम के आगम अनुवादकारों ने जैनशासन का द्रोह किया है, इसका जमके मुकाबला करना चाहिए।

यह घोटाला अपने मत के दृष्टिराग से जान बूझकर के किया गया है और १८ पापस्थानक में सभी पापों का बाप है यह "उत्सूत्र प्ररुपणा"। इनको मजा चखाना ही होगा।

**सत्यम्** : दोस्त ! द्वेष करने से कुछ नहीं होगा, पाप के उदय से दुर्बुद्धि जगती है। परमात्मा से प्रार्थना करो कि इन्हें भी सद्बुद्धि मिले और सत्य के मार्ग पर चलकर अपना कल्याण करें। मिलते हैं दो दिन बाद मायावती Aunty के घर, तब तक मैं भी आगे की तैयारीयाँ कर लूंगा।

दो दिन बाद सत्यम् और मोहित जिनालय दर्शन कर प्रभु से प्रार्थना करके मायावतीजी के घर पहुँचे। दरवाजे पर पहुँचते ही चप्पलों का ढेर दिखने से मालूम हो गया कि सभी पड़ोसी आज दुगुनी संख्या में ज्ञानचर्चा सुनने आए हैं और प्रवेश करने से पहले ही शुभ शकुन मिल गया। मस्तक पर जिनालय के तिलक से सुशोभित सरलाजी सत्यम् की राह देखते हुए दरवाजे पर खड़ी थी और प्रवेश करते ही हथेली आगे की जिसमें एक छोटी-सी डिब्बी थी...

**सत्यम्** : Aunty जी ! यह क्या है ?

**सरला** : बेटा यह प्रभुजी के प्रक्षाल का जल है। इसकी दो बूंदे तुम्हारी आँखों पर लगा लो, परमात्मा की शक्ति तुम्हें सहाय करेगी।
(गद्गद् स्वर से सत्यम् ने कहा...)

**सत्यम्** : Aunty ! यह तिलक, प्रक्षाल और आप... मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा !

**सरला** : बेटा ! उस दिन की ज्ञानचर्चा सुनकर मैं तो सत्य समझ गयी हूँ, अब मुझे लोगों का डर नहीं, प्रभु का जो सच्चा मार्ग है, उस पर किसी की शरम नहीं।

(सरलाजी ने विजयतिलक के रुप में प्रक्षाल की दो बुंद सत्यम् की आँखों और मस्तक पर लगाई)

**मायावती** : (परिचय देती हुई) ये हैं श्रीमान झुठालालजी डोशी हमारे संघ के बहुत से स्वाध्यायीयों को पठन-पाठन आदि करवाते हैं एवं आगम अनुवादक संपादकों को भी उचित मार्गदर्शन आदि दिया करते हैं और यह है सत्यम् ओस्तवाल अपनी कुशाग्र बुद्धि से इसने 'अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षा संघ' के आगम अनुवादों का अभ्यास किया एवं उनमें किये गए मूर्त्तिपूजा विरोध को उनके ही अनुवाद के आधार से गलत साबित किया है। इसका यह दावा है कि आगमों में जिनेश्वर देवों की मूर्तिपूजा बताई है।

**झूठालालजी** : माया ! अब मुझसे बात होगी, तब पता चलेगा कि मूर्त्तिपूजा के विरोध का लेख गलत है या सही ? उससे पहले ऐसा कह देना उचित नहीं है।

**मायावती** : नहीं गुरुजी !! सत्यम् ने जो प्रश्न मुझे पूछे थे वे सारे प्रश्नों का आप मुझे संतोषकारक प्रत्युत्तर नहीं दे सकें, तो आप दूसरी बातों से इस अनुवाद को सत्य साबित कर सको तो ठीक बाकी अब मुझे भी ऐसा लगता है कि इस अनुवाद में मूर्तिपूजा को झूठी रीति से नकारा गया है।

**झूठालालजी** : अरे माया !! क्या तुम भी ?? अनुवादकारों पर विश्वास नहीं करती हो !!

(बुलंदी आवाज से मायावती ने जवाब दिया)

**मायावती** : गुरुजी ! आप सत्यम् को ही समझाए मुझे उसकी बातों में सत्यता की प्रतीति होती है।

**झूठालालजी** : सत्यम् ! तुम्हारी यह बात तो ठीक है कि आगमों में जिनप्रतिमा की बात आती है, लेकिन वहाँ जिन का अर्थ तीर्थंकर देव नहीं करना अपितु अन्यदेव ही करना उचित है, क्योंकि देवलोक के अधिकांश देव मिथ्यात्वी होते हैं और उन्हें जिनेश्वर से कोई मतलब नहीं होता और अपने भौतिक सुख समृद्धि हेतु जिनप्रतिमा की पूजा वे करते हैं।

**सत्यम्** : अच्छा ! तो यह तो बताईए कि आपका वह 'जिन' कौन-से निकाय का देव है ? ऐसे तो कौन-से पुण्य का उदय है उस कामदेव, यक्ष, भूत का जो १२ वे देवलोक के इन्द्र भी उनकी पूजा करते हैं। व्यंतर से लेकर १२ देवलोक का कौन-सा देव है वह जिसे सभी देवलोक में सर्वशक्तिमान् अच्युतेन्द्र भी नमस्कार करता है ?

(झूठालालजी सिर खुजलाते हुए भारी चिन्ताग्रस्त हुए।)

**सत्यम्** : कभी देखा है राजा को सैनिक के पैर दबाते हुए ?

(पास खड़े मित्र हरिश्चंद्रजी ने झूठालालजी के कान में कहा)

**हरिश्चंद्र** : झूठालालजी ! मैंने पहले ही आपको बताया था कि इन आगमों के अनुवाद में इस तरह झूठ घोलकर लिखना उचित नहीं है। इस पुस्तक के प्रकाशक को चेतावनी देनी चाहिए। अब भी समय है सच बता दो कि इन आगमों के पाठ को देखकर के हमारे संप्रदाय के लोग पूजा शुरु न कर दें, इसलिए झूठे अर्थ किये हैं। इसी में आपका भला होगा !

(होठ पर अंगुली रखकर हरीशचंद्र को चुप रहने का इशारा करके झूठालालजी बोले)

**झूठालाल** : सत्यम् ! क्या तुमने देखा है ? सुना है ? किसी मुनि भगवंत को कोई फूल की माला पहना रहा हो। तो सर्वोत्कृष्ट संयमी तीर्थंकर देव पर सचित्त वस्तुओं की हिंसा से पूजा की बात तो किसी पागल के दिमाग में ही बैठेगी।

**सत्यम्** : जब परमात्मा का जन्म होता है, तब मेरुपर्वत पर अभिषेक होता है, दीक्षा के पूर्व अभिषेक होता है, निर्वाण के बाद भी अभिषेकादि होते हैं। केवल व्रतकाल में सचित्त आदि का उपचार नहीं किया जाता है। आगमों में लिखा है, वह सचित्त

जल से किया हुआ अभिषेकादि ''निस्सेयसाए'' यानी मोक्ष के लिए होता है। निर्वाण के बाद परमात्मा के पार्थिव देह की अर्चना कर कल्याण पाया जाता है तो समान आकृतिवाली प्रतिमा की अर्चना करके क्यों कल्याण नहीं पा सकते ?

झूठालालजी : अरे ! लेकिन वह तो तीर्थंकर की प्रतिमा होती तो कल्याण करती ना, वह तो संसार सुख देनेवाले अन्य देवों की ही है।

सत्यम् : कमाल है ! तो इतनी देर से क्या मैं तेलुगु बोल रहा था ? इतना समझ में नहीं आया तो और सुनो ज्ञाताधर्मकथा सूत्र में द्रौपदी ने प्रतिमा का पूजन करने के बाद 'नमुत्थुणं सूत्र' से वहाँ स्तवना की है तो तीर्थंकर देव के विशेषणों से भरे नमुत्थुणं सूत्र से क्या अन्य देवों की स्तवना हो सकती है ? इस सूत्र से ही मालूम होता है कि तीर्थंकर देव की पूजा करके उनकी स्तवना भी की।

हरिश्चंद्र : झूठालाल ! फिर से कहता हूँ सत्य को झुठलाने की ताकत किसी में नहीं है आप भी जानते हो कि सत्य क्या है। स्वीकार लो नहीं तो एक झूठ को छुपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ेंगे !

(बात पर ध्यान न देते हुए फिर उत्साह में आकर)

झूठालालजी : सत्यम् ! ''जिन'' शब्द के कई अर्थ होते हैं ठाणांगसूत्र के तीसरे स्थान चौथे उद्देशक में तीन प्रकार के जिन बताए हैं 'अवधिजिन, मणपज्जयणाण जिन, केवलणाणजिन' तो यहाँ अवधिजिन लेना हैं। अवधिज्ञान तो देवों को भी होता है इसलिए देव भी जिन ही कहलाते हैं।

सत्यम् : हाँ ! कहलाते हैं, लेकिन अवधिजिन यानी सम्यग्दृष्टि क्योंकि मिथ्यादृष्टि को विभंगज्ञानी कहा जाता है और कोई सम्यग्दृष्टि देव को पता चल जाए की तीर्थंकरों की स्तवना से उसकी पूजा हो रही है तो परमात्मा की इस आशातना को वह सहन ही नहीं कर सकेगा क्योंकि वह देव सम्यग्दृष्टि है परमात्मा का परमभक्त है और भक्त कभी भगवान के सिंहासन पर बैठने की गुस्ताखी नहीं करते।

मायावती : सत्यम् ! तुम यहाँ पर भूल रहे हो (१) रायप्पसेणीय सूत्र Page 112 (२) जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति Page 25 पर अनुवाद में इसी चर्चा में यह लिखा है कि 'पण्णवणा सूत्र' के अवधि पद में 'अवधिजिन' के दो भेद बताए हैं सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि तो इस बात से तुम गलत साबित होते हो ''जिन'' मिथ्यात्वी भी हो सकते हैं।

**समाधान** - ठाणांग सूत्र के तीसरे स्थान के चौथे उद्देशक में तीन प्रकार के जिन बताये हैं-
**"तओ जिणा पण्णत्ता तं जहां - ओहिणाण जिणे, मण पज्जवणाण जिणे, केवल णाण जिणे"** अर्थात् तीन प्रकार के जिन होते हैं - १. अवधि ज्ञानी जिन २. मनःपर्यव ज्ञानी जिन ३. केवल ज्ञानी जिन। इस पाठ में अवधि ज्ञानी को भी जिन कहा है तथा पन्नवणा सूत्र के तेतीसवें अवधि पद में अवधि ज्ञानी के दो भेद बताये हैं - सम्यग् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि। इस पाठ के आधार से लोक में जितने भी देव हैं चाहे सम्यग् दृष्टि हों या मिथ्या दृष्टि, वे सभी अवधि ज्ञानी ही होने से 'जिन' कहलाते हैं और इनकी मूर्ति 'जिन प्रतिमा' कहलाती है। अत कामदेव, भैरु, यक्ष, यक्षिनी, भूत, प्रेत, पित्तर आदि की मूर्तियाँ भी जिन प्रतिमा ही होती हैं और सांसारिक लालसा से इनकी पूजा की जाती है, धर्म के लिए नहीं। क्योंकि इनकी पूजा में छह

**पुस्तक** - **जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र** **Page 25** ● **रायप्पसेणीय सूत्र** **Page 112**
**प्रकाशक** - **अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

**झूठालालजी** : (अहंकार से इतराते हुए कहा) बच्चे ! पहले इन पुस्तकों का सही ढंग से तलस्पर्शी अभ्यास करो फिर हमसे चर्चा करना।

**सत्यम्** : अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे।

**झूठालालजी** : बच्चे ! इस विषय में तुझे ही जवाब देना होगा। क्योंकि तुमने ही गलत प्रस्तुति की है तुम ही ऊँट हो और तुम्हारे उपर ही पहाड़ है।

**सत्यम्** : मैंने इस प्रकरण का गहन अध्ययन किया है और मैं चाहता ही था कि इसका जिक्र किया जाए। मायावती Aunty ! आपने इस विषय को उठाकर के मेरा कार्य बहुत ही सरल कर दिया। धन्यवाद !

**मायावती** : (चौंकते हुए) मतलब क्या ?

**सत्यम्** : समझाता हूँ, पहले बताओ इन दोनों पुस्तकों में कौन-से आगम के आधार से यह बात लिखी है ?

**मायावती** : पण्णवणा सूत्र के अवधि पद के आधार से।

**सत्यम्** : जरा पण्णवणा सूत्र खोल करके तो देखो !

(मायावती ने पुस्तक खोलकर फटी आँखों से पढ़करके चौंकते हुए कहाँ)

**मायावती** : अरे ! इसमें तो ऐसा कुछ लिखा ही नहीं है। यहाँ पर तो ऐसा लिखा है कि अवधिज्ञान के दो भेद (१) भवप्रत्ययिक (२) क्षायोपशमिक। सम्यग्दृष्टि एवं

मिथ्यादृष्टि तो बताया ही नहीं तो इसका मतलब की इन दो अनुवादों में आगम का झूठा पाठ बताया है यानि 'जिन' सम्यग्दृष्टि ही होते है और नमुत्थुणं स्तवना योग्य तो केवलज्ञानी जिन ही होने से सिद्ध हो गया कि यह तीर्थंकर देव की ही प्रतिमा देवलोक में पूजी जाती है।

इन दस द्वारों में से कहीं कहीं चौथे और पांचवें द्वार को, कहीं कहीं सातवें और आठवें द्वार को तथा नौवें और दसवें द्वार को एक ही द्वार में सम्मिलित कर क्रमशः सात द्वारों या आठ द्वारों से भी विषय की प्ररूपणा की गयी है।

## १. भेद द्वार

**कइविहा णं भंते! ओही पण्णत्ता?**

**गोयमा! दुविहा ओही पण्णत्ता। तंजहा - भवपच्चइया य खओवसमिया य, दोण्हं भवपच्चइया, तंजहा - देवाण य णेरइयाण य, दोण्हं खओवसमिया, तंजहा - मणूसाणं पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण य॥ ६६६॥**

**पुस्तक - पन्नवणा सूत्र**
**प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

सत्यम् : हाँ ! Aunty आप ठीक समझे। जो बातें आगम में ही नहीं है, उन आगम विरोधी बातों को आगमवाणी बता करके श्रुतज्ञान की आशातना और तीर्थंकर का द्रोह किया है। यह कोई सामान्य अपराध नहीं है। आगमों का झूठा पाठ बताकर अपनी जिद को पुष्ट करने का भयंकर पाप किया है और भोले लोगों को अपनी मिथ्या मान्यता में फँसाने की यह साजिश है। स्पष्ट है कि मिथ्यात्वी जीवों को आगमों में विभंगज्ञानी कहा गया है और सम्यक्त्वी को ही अवधिज्ञानी कहा है, तो फिर अवधिज्ञानी के सम्यक्त्वी और मिथ्यात्वी ऐसे दो भेद बताना मृषावाद ही है और ऐसे मृषावाद से अपनी कुमान्यता को सिद्ध करने के लिए आगम का Label लगाना **उत्सूत्र प्ररुपणा** है।

## • आगम अनुवादों में उत्सूत्र प्ररुपणा •

समाधान - ठाणांग सूत्र के तीसरे स्थान के चौथे उद्देशक में तीन प्रकार के जिन बताये हैं- "तओ जिणा पण्णत्ता तं जहां - ओहिणाण जिणे, मण पज्जवणाण जिणे, केवल णाण जिणे" अर्थात् तीन प्रकार के जिन होते हैं - १. अवधि ज्ञानी जिन २. मनःपर्यव ज्ञानी जिन ३. केवल ज्ञानी जिन। इस पाठ में अवधि ज्ञानी को भी जिन कहा है तथा पन्नवणा सूत्र के तेतीसवें अवधि पद में अवधि ज्ञानी के दो भेद बताये हैं - सम्यग् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि। इस पाठ के आधार से लोक में जितने भी देव हैं चाहे सम्यग् दृष्टि हों या मिथ्या दृष्टि, वे सभी अवधि ज्ञानी ही होने से 'जिन' कहलाते हैं और इनकी मूर्ति 'जिन प्रतिमा' कहलाती है। अत कामदेव, भैरु, यक्ष, यक्षिनी, भूत, प्रेत, पित्तर आदि की मूर्तियाँ भी जिन प्रतिमा ही होती हैं और सांसारिक लालसा से इनकी पूजा की जाती है, धर्म के लिए नहीं। क्योंकि इनकी पूजा में छह

**पुस्तक - जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र Page 25 • रायप्पसेणीय सूत्र Page 112**
**प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

इन दस द्वारों में से कहीं कहीं चौथे और पांचवें द्वार को, कहीं कहीं सातवें और आठवें द्वार को तथा नौवें और दसवें द्वार को एक ही द्वार में सम्मिलित कर क्रमशः सात द्वारों या आठ द्वारों से भी विषय की प्ररूपणा की गयी है।

### १. भेद द्वार

**कइविहा णं भंते! ओही पण्णत्ता?**

**गोयमा! दुविहा ओही पण्णत्ता। तंजहा - भवपच्चइया य खओवसमिया य, दोण्हं भवपच्चइया, तंजहा - देवाण य णेरइयाण य, दोण्हं खओवसमिया, तंजहा - मणूसाणं पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण य॥ ६६६॥**

**पुस्तक - पन्नवणा सूत्र**
**प्रकाशक - अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ (जोधपुर)**

**मायावती** : झूठालालजी ! क्या कहना है आपको इस विषय में ?

**हरिशचंद्र** : (बीच में बोलते हुए) अब बोलने जैसी हालत ही कहाँ है ? रंगे हाथ पकड़े जाने के बाद चोर अपनी सफाई क्या दे सकता है ? साफ दिखता है कि ज्ञान पिरोसने के बहाने सच्चाई को छुपाने के धंधे है और जिनशासन में ऐसी उत्सूत्र प्ररुपणा को अनंत भवसंसार का कारण बताया है। झूठालालजी ! ऐसे तुच्छ मनोवृत्तिवाले अनुवादकों के पुस्तकों का आप प्रचार करते हो और प्राचीन टीका, भाष्य आदि को पढ़ने की बात आए तो कहते हो कि टीकाकार तो मिथ्यात्वी भी हो सकते हैं, इसलिए नहीं पढ़ना चाहिए। मैं कहता हूँ ऐसी सुस्पष्ट चोरी करनेवाले क्या सम्यक्त्वी कहलायेंगे ? तो उनके अनुवाद कहाँ पढ़ने योग्य रहे हैं ?

**झूठालालजी** : (शरम से मुँह झुकाकर) तुम्हारी बात सत्य है लेकिन संप्रदाय को टिकाने हेतु ऐसा भी करना पड़ता है। अन्यथा सभी जैन मूर्ति पूजा करते हो जाएँगे। तो सभी मंदिरमार्गी कहे जाएँगे हमारा तो अस्तित्व ही मिट्टीयाँ मेट हो जायेगा।

**मायावती** : लेकिन आगमों का अस्तित्व मिटाकर अपना अस्तित्व टिकाना तो जिनशासन का द्रोह है ! आगामी भवों में परमात्मा की वाणी सुनने को भी नहीं मिलेगी। ऐसे तीव्र ज्ञानावरणीय कर्मबंध होंगे।

ऐसा आग्रह रखनेवाले का सम्यक्त्व कैसे टिक सकता है ? सत्यम् ! तुम्हारी बात सत्य है मुझे लगता है कि हम सभी को इस संस्था का विरोध करना चाहिए भले जिनपूजा किसी भी कारणवश न करे लेकिन ऐसे झूठे अर्थघटन करनेवालों की पुस्तकें पढ़नी ही नहीं चाहिए। सच कहूँ रक्षक ही भक्षक बन चुके हैं।

**झूठालालजी** : देखो सत्यम् ! तुम्हारी बात सच है आगम में सुस्पष्ट निर्देश है कि जिनप्रतिमा तीर्थंकरों की ही है एवं उसकी पूजा भी सम्यक्त्वीयों ने अपने सम्यक्त्व की शुद्धि

हेतु की हैं यह बात निर्विवाद सत्य है। लेकिन सभी अनुवादकारों ने इस सत्य को नहीं छुपाया, केवल इन्होंने ही यह बड़ा अपराध किया है तो मैं मेरे सभी स्वाध्यायीयों को सूचन करुँगा की इस संस्था की पुस्तकों का बहिष्कार करें।

**पूरी सभा** : अब 'अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृतिरक्षक संघ' को इस अपराध के लिए माफी मांगनी पड़ेगी।

**मायावती** : चलो यह काम तो बाद का रहा। अब आगम में तीर्थंकरदेव की प्रतिमा एवं पूजन की बातें प्राप्त हो रही हैं तो अब हमें क्या करना ? क्योंकि हम तो आज तक यही समझते थे कि जहाँ हिंसा वहाँ धर्म हो ही नहीं सकता।

**सत्यम्** : Aunty जी ! परमात्मा के जन्माभिषेक में तो 1 करोड़ 60 लाख कलशों से गिरते पानी से नदी बहने लगती है, फिर भी वहाँ लिखा है 'निस्सेअसाए' यानि यह अभिषेक मोक्ष के लिए है। आप साधुओं की तरह संपूर्णरुप से हिंसा के त्यागी हो तो ठीक हैं लेकिन अपने रसोईघर में सारे दिन वनस्पति आदि स्थावरकाय की हिंसा करके स्वादिष्ट भोजन का स्वाद लेते हो और परमात्मा को पुष्प अर्पण में ''हिंसा-हिंसा'' की पोपट रट रटते हो। खुद तो बाल्टीयाँ भर-भर करके साबुन रगड़-रगड़ कर स्नान करते हो और परमात्मा के प्रक्षाल की बात आए तब अहिंसा के पुजारी बन बैठते हो ! चातुर्मास में गीली सड़कों पर बारीश में चलकर प्रवचन सुनने जाने में हिंसा नहीं मानते उसका विरोध भी नहीं करते, बसें भर-भर कर संत वंदनार्थ आनेवाले साधर्मिकबंधुओं को रसोई बनवाकर भोजन नहीं करवाने की सौगंध तो कोई संत-सतीयाँ नहीं देते। क्या 500-1000 लोगों का खाना बनाने में छ काय की क्रूर हिंसा नहीं होती ? अपने घर के लिए भोजन बनाना उचित है, लेकिन बाहरगाँव के साधर्मिकों के लिए होनेवाली हिंसा अपने सिर पर क्यों लेते हो ?

**मायावती** : साधर्मिक भक्ति में तो धर्म ही है ना ?

**सत्यम्** : वही तो मैं कहता हूँ। त्यागी-संयमी के लिए जिनपूजा आदि अनुष्ठान अनुचित है। लेकिन अविरति में मजे उड़ानेवाले श्रावकों के लिए जिनपूजा आदि आवश्यक कर्त्तव्य है क्योंकि शुभ भाव से पापकर्म की निर्जरा होती है एवं उत्तरोत्तर कल्याण हेतु पुण्य का उपार्जन भी होता है।

**मायावती** : बात तो सही है प्रभु का शासन स्याद्वादमय है, एकांतवाद से तो भ्रम (मिथ्यात्व) ही होगा।

**सत्यम्** : देख लो ज्ञाताधर्मकथा सूत्र में द्रौपदी सती ने धूप पूजा की तो वहाँ लिखा है ***''धूवं दाऊणं जिणवराणं''*** जिनेश्वर को धूप अर्पण करके लेकिन 'जिण पडिमाणं' ऐसा नहीं लिखा जिनेश्वर और जिनेश्वर की प्रतिमा दोनों को गणधर भगवंतों ने समान बताया है। आप जानते ही हो कि दीवार पर पू. पिताजी की एवं गुरुजी की Photo हैं, साक्षात् पिताश्री या गुरुजी नहीं है लेकिन कभी भी उस पर थूंकने का दुःसाहस नहीं कर सकते। आप उस Photo की सफाई करोगे तब भी हृदय में शुभ भाव की ही स्पर्शना होगी। जिनपूजा में भी उसी समानता का आप निषेध हरगिज नहीं कर सकते। फिर भी आप न मानो तो नुकसान आपको ही है।

**मायावती** : तुम्हारी बात सत्य है, वैसे भी हम गृहस्थों को शरीर की सजावट और भोग सामग्री की आसक्ति होती ही है, तो जिनपूजा करते समय उन सभी विषयों के ममत्वत्याग की प्रार्थना अवश्य हमें सर्वविरति के परिणाम जगाएगी।

**सारी सभा** : सत्यम्! अब तुम ही बताओं कि किस तरह जिनेश्वर देव की पूजा करनी ? हम तो तैयार है जिसे जो कुछ कहना हो सो कहे, हम तो अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ना चाहते हैं।

**सत्यम्** : बहुत ही आसान है आप कल ही स्नान के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर तैयार होकर के आ जाना हम साथ में पूजा करेंगे और किसी भी जिनालय में आप जाओगे तो कोई भी प्रभुभक्त परमात्मा की पूजा सिखाने से इनकार नहीं करेगा और पूछने में तुम शरमाना मत क्योंकि दूसरों को तो आनंद ही होगा कि एक पुण्यात्मा परमात्मा से जुड़ने जा रहा है।

# तत्वार्थ सूत्र के रचयिता उमास्वातिजी महाराज की वाणी

**देहादि णिमित्तंपि हु जे, कायवहम्मि तह पयट्टंति**
**जिणपूआ कायवहम्मि, तेसिमपवत्तणं मोहो ।।**

शरीर, व्यापार, खेती आदि सांसारिक कार्यों में तथा संत-सतियों की जन्म जयन्तियाँ, श्मशान यात्रा, किताबें छपवाना, मर्यादा-महोत्सव, दीक्षा महोत्सव, चातुर्मास में वाहन द्वारा संत-सतियों के दर्शनार्थ जाना, बड़े-बड़े स्थानक, सभा भवन, समता भवन बनवाना आदि धार्मिक कार्यों में हिंसा करते ही हैं। लेकिन जीव-हिंसा का बहाना बनाकर जो लोग समकित और मोक्ष देनेवाली जिनपूजा को नहीं करते हैं। यह उनका मिथ्यात्व है। मोह है। !!!

**- श्रावक प्रज्ञप्ति श्लोक नं. ३४९**
**(श्री उमास्वातिजी महाराज)**

Created by :
Kirit B. Vadecha
© 23737600 / 7977406533